ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

नाथ सम्प्रदाय का उद्भव व विकास

DR.PANKAJ GAUR

Associate Professor, Govt. Girls College, Ajmer, Rajasthan, India

सार

भारत में जब तांत्रिकों और साधकों के चमत्कार एवं आचार-विचार की बदनामी होने लगी और साधकों को शाक्त, मद्य, मांस तथा स्त्री-संबंधी व्यभिचारों के कारण घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा तथा इनकी यौगिक क्रियाएँ भी मन्द पड़ने लगी, तब इन यौगिक क्रियाओं के उद्धार के लिए नाथ सम्प्रदाय का उदय हुआ था।

परिचय

वस्तुतः भारत ऋषि-मुनियों, पैगम्बरां, योगियों आदि की परम्पराओं वाला देश रहा है। यदि नाथ सम्प्रदाय के सामाजिक व राजनीतिक योगदान पर चर्चा की जाये तो यह बात स्पष्ट होती है कि नाथ योगियों ने अपनी भारतीय परम्पराओं व संस्कृति का निर्वहन करते हुए समाज का भला किया है और आम जनमानस की श्रद्धा भी इस सम्प्रदाय के प्रति रही है। यदि वर्तमान सन्दर्भ में देखा जाये तो नाथ सम्प्रदाय के कई योगी राजनीतिक पटल पर अच्छे कार्य करते रहे हैं और कर रहे हैं। इसके साथ-साथ इस सम्प्रदाय के द्वारा कई शिक्षण संस्थाऐं व स्वास्थ्य केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं, जिनका सामाजिक दृष्टि से काफी महत्व है। बाबा मस्तनाथ मठ हरियाणा के साथ-साथ देश के अन्य क्षेत्रों के लिए भी एक अनूठा उदाहरण है, जो शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने के साथ-साथ सामाजिक हित के अन्य कार्यों में भी संलग्न है।[10]

नाथ सम्प्रदाय भारत का एक हिंदू धार्मिक पन्थ है। मध्ययुग में उत्पन्न इस सम्प्रदाय में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखायी देता है। यह हठयोग की साधना पद्धति पर आधारित पंथ है। शिव इस सम्प्रदाय के प्रथम गुरु एवं आराध्य हैं। इसके अलावा इस सम्प्रदाय में अनेक गुरु हुए जिनमें गुरु मच्छिन्द्रनाथ /मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरखनाथ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। नाथ सम्प्रदाय समस्त देश में बिखरा हुआ था। गुरु गोरखनाथ ने इस सम्प्रदाय के बिखराव और इस सम्प्रदाय की योग विद्याओं का एकत्रीकरण किया, अतः इसके संस्थापक गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथसम्प्रदाय में योगी और जोगी एकही सिक्के के दो पहलू हैं, एक जो सन्यासी जीवन और दुसरा गृहस्थ जीवन हैं। सन्यासी, योगी, जोगी, नाथ,दसनामी, गिरि गोस्वामी (बिहार),उपाध्याय (पश्चिम उत्तर प्रदेश में), नामों से जाना जाता है। इनके कुछ गुरुओं के शिष्य मुसलमान, जैन, सिख और बौद्ध धर्म के भी थे।[9]

नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख गुरु

आदिगुरू	आदियोगी आदिनाथ सर्वश्वर भगवान महादेव सदाशिव है।। (हिन्दू देवता)
महर्षि मच्छेन्द्रनाथ	8वीं या 9वीं सदी के योग सिद्ध, "तंत्र" परंपराओं और अपरंपरागत प्रयोगों के लिए मशहूर
महायोगी गोरक्षनाथ (गोरखनाथ)	10वीं या 11वीं शताब्दी में प्रगट, मठवादी नाथ संप्रदाय के संस्थापक, व्यवस्थित योग तकनीकों, संगठन , हठ योग के ग्रंथों के रचियता एवं निर्गुण भक्ति के विचारों के लिए प्रसिद्ध
जालन्धरनाथ	12वीं सदी के सिद्ध, मूल रूप से जालंधर (पंजाब) निवासी, राजस्थान और पंजाब क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त
कानीफनाथ	14वीं सदी के सिद्ध, मूल रूप से बंगाल निवासी, नाथ सम्प्रदाय के भीतर एक अलग उप-परंपरा की शुरूआत करने वाले
चौरंगीनाथ	बंगाल के राजा देवपाल के पुत्र, उत्तर-पश्चिम में पंजाब क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, उनसे संबंधित एक तीर्थस्थल सियालकोट (अब पाकिस्तान में) में है।
चर्पटीनाथ	हिमाचल प्रदेश के चंबा क्षेत्र में हिमालय की गुफाओं में रहने वाले, उन्होंने अवधूत का प्रतिपादन किया और बताया कि व्यक्ति को अपनी आन्तरिक शक्तियों को बढ़ाना चाहिए क्योंकि बाहरी प्रथाओं से हमें कोई फर्क नहीं पड़ता है।
भर्तृहरिनाथ	उज्जैन के राजा और विद्वान जिन्होंने योगी बनने के लिए अपना राज्य छोड़ दिया।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

गोपीचन्दनाथ	बंगाल की रानी के पुत्र जिन्होंने अपना राजपाट त्याग दिया था.
रत्ननाथ	13वीं सदी के सिद्ध, मध्य नेपाल और पंजाब में ख्यातिप्राप्त, उत्तर भारत में नाथ और सूफी दोनों सम्प्रदाय में आदरणीय
धर्मनाथ	15वीं सदी के सिद्ध, गुजरात में ख्यातिप्राप्त, उन्होंने कच्छ क्षेत्र में एक मठ की स्थापना की थी, किंवदंतियों के अनुसार उन्होंने कच्छ क्षेत्र को जीवित रहने योग्य बनाया था .
मस्तनाथ	18वीं सदी के सिद्ध, उन्होंने हरियाणा में एक मठ की स्थापना की थी

यह ज्यादातर राजस्थान , हरियाणा , में निवास करते है ।[6,7,8]

जीवन शैली

नाथ साधु-सन्त परिव्राजक होते हैं। वे भगवा रंग के बिना सिले वस्त्र धारण करते हैं। ये योगी अपने गले में काली ऊन का एक जनेऊ रखते हैं जिसे 'सिले' कहते हैं। गले में एक सींग की नादी रखते हैं। इन दोनों को 'सींगी सेली' कहते हैं। उनके एक हाथ में चिमटा, दूसरे हाथ में कमण्डल, दोनों कानों में कुण्डल, कमर में कमरबन्ध होता है। ये जटाधारी होते हैं। नाथपन्थी भजन गाते हुए घूमते हैं और भिक्षाटन कर जीवन यापन करते हैं। उम्र के अंतिम चरण में वे किसी एक स्थान पर रुककर अखण्ड धूनी रमाते हैं। कुछ नाथ साधक हिमालय की गुफाओं में चले जाते हैं।

साधना-पद्धति

नाथ सम्प्रदाय में सात्विक भाव से शिव की भक्ति की जाती है। वे शिव को 'अलख' (अलक्ष) नाम से सम्बोधित करते हैं। ये अभिवादन के लिए 'आदेश' या आदीश शब्द का प्रयोग करते हैं। अलख और आदेश शब्द का अर्थ प्रणव या 'परम पुरुष' होता है। नाथ साधु-सन्त हठयोग पर विशेष बल देते हैं।

गुरु परम्परा

प्रारम्भिक दस नाथ

आदिनाथ, आनंदिनाथ, करालानाथ, विकरालानाथ, महाकाल नाथ, काल भैरव नाथ, बटुक नाथ, भूतनाथ, वीरनाथ और श्रीकांथनाथ। इनके बारह शिष्य थे जो इस क्रम में है- नागार्जुन, जड़ भारत, हरिशचंद्र, सत्यनाथ, चर्पटनाथ, अवधनाथ, वैराग्यनाथ, कांताधारीनाथ, जालंधरनाथ और मालयार्जुननाथ

चौरासी सिद्ध एवं नौ नाथ

नवनाथ (दक्षिण भारतीय चित्रण)

८वी सदी में ८४ सिद्धों के साथ बौद्ध धर्म के वज्रयान की परम्परा का प्रचलन हुआ। ये सभी भी नाथ ही थे। सिद्ध धर्म की वज्रयान शाखा के अनुयायी सिद्ध कहलाते थे। उनमें से प्रमुख जो हुए उनकी संख्या चौरासी मानी गई है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

नौ नाथ गुरु

1. मच्छेंद्रनाथ
2. गोरखनाथ
3. जालंदरनाथ
4. नागेशनाथ
5. भर्तरीनाथ
6. चर्पटीनाथ
7. कानीफनाथ
8. गहनीनाथ
9. रेवननाथ

इसके अलावा ये भी हैं:

1. आदिनाथ 2. मीनानाथ 3. गोरखनाथ 4.खपरनाथ 5.सतनाथ 6.बालकनाथ 7.गोलक नाथ 8.बिरुपक्षनाथ 9.भर्तृहरि नाथ 10.अईनाथ 11.खेरची नाथ 12.रामचंद्रनाथ।

ओंकार नाथ, उदय नाथ, सन्तोष नाथ, अचल नाथ, गजबेली नाथ, ज्ञान नाथ, चौरंगी नाथ, मत्स्येन्द्र नाथ और गुरु गोरक्षनाथ। सम्भव है यह उपयुक्त नाथों के ही दूसरे नाम है। बाबा शिलनाथ, दादाधूनी वाले, , गोगा नाथ, पंढरीनाथ और श्री स्वामी समर्थ, गजानन महाराज को भी नाथ परंपरा का माना जाता है। वैष्णोवी देवी धाम के भगवान भैरवनाथ भी नाथ संप्रदाय के अग्रज माने जाते हैं। और विशेष इन्हे योगी भी कहते और जोगी भी कहा जाता हैं। देवो के देव महादेव जी स्वयं शिव जी ने नवनाथो को खुद का नाम जोगी दिया हैं। इन्हें तो नाथो के नाथ नवनाथ भी कहा जाता हैं।3,4,5]

विचार-विमर्श

सन्यास दीक्षा

नाथ सम्प्रदाय में किसी भी प्रकार का भेद-भाव आदि काल से नहीं रहा है। इस संप्रदाय को किसी भी जाति, वर्ण व किसी भी उम्र में अपनाया जा सकता है।सन्यासी का अर्थ काम , क्रोध , मोह , लोभ आदि बुराईयों का त्याग कर समस्त संसार से मोह छोड़ कर शिव भक्ति में समाधि लगाकर लीन होना बताया जाता है। प्राचीन काल में राजा-महाराजा भी अपना राज-पाठ छोड़ सन्यास इसी लिए लिया करते थे ताकि वे अपना बचा हुआ जीवन सांसारिक परेशानियों को त्याग कर साधुओ की तरह साधारण जीवन बिताते थे। नाथ संप्रदाय को अपनाने के बाद 7 से 12 साल की कठोर तपस्या के बाद ही सन्यासी को दीक्षा दी जाती थी। विशेष परिस्तिथियों में गुरु अनुसार कभी भी दीक्षा दी जा सकती है। दीक्षा देने से पहले वा बाद में दीक्षा पाने वाले को उम्र भर कठोर नियमो का पालन करना होता है। वो कभी किसी राजा के दरबार में पद प्राप्त नहीं कर सकता , वो कभी किसी राज दरबार में या राज घराने में भोजन नहीं कर सकता परन्तु राज दरबार वा राजा से भिक्षा जरुर प्राप्त कर सकता है। उसे बिना सिले भगवा वस्त्र धारण करने होते है ।हर साँस के साथ मन में आदेश शब्द का जाप करना होता है किसी अन्य नाथ का अभिवादन भी आदेश शब्द से ही करना होता है । सन्यासी योग व जड़ी- बूटी से किसी का रोग ठीक कर सकता है पर एवज में वो रोगी या उसके परिवार से भिक्षा में सिर्फ अनाज या भगवा वस्त्र ही ले सकता है। वह रोग को ठीक करने के लिए किसी भी प्रकार के आभूषण , मुद्रा आदि ना ले सकता हैऔर न इनका संचय कर सकता। महाराष्ट्र मे जो नवनाथ भक्तिसार ग्रंथ प्राप्त हुआ है जो गुरु मच्छेंद्रनाथ द्वारा लिखित हे. उस आधार पर ऐसा कहा जाता हे कि नाथसंप्रदाय गुरु गोरक्षनाथ द्वारा निर्मित हे।

सिद्धों और नाथों में भेद

सिद्ध अनीश्वरवादी थे, जबकि नाथ ईश्वरवादी। सिद्ध नारी भोग में विश्वास करते थे जबकि नाथपन्थी उसके विरोधी थे। गुरु महिमा, पिण्ड-ब्रह्माण्डवाद तथा हठयोग नाथ साहित्य का वैशिष्ट्य है। नाथों ने निरीश्वरवादी शून्य को ईश्वरवादी शून्य में प्रतिष्ठित किया।

सर्वप्रथम अत्यन्त विनम्रतायुä गर्व के साथ यह उल्लेख किया जा सकता है कि, नाथ सम्प्रदाय के प्रति समर्थन और श्रद्धा के इस अनन्त अन्तरिक्ष मेंं पौराणिक काल से अब तक ढूंढने पर भी लजिजत, निन्दा और आलोचना का कोई एक शूæ नक्षत्र भी दृषिट मेंं नहींं आता। योगी गोरक्षनाथ द्वारा प्रवर्तित योगमार्ग और नाथपंथ को समझने के लियेे उनके संस्कृत ग्रन्थों अथवा वाणियों पर दृषिटपात करने की आवष्यकता है जिसे हम गोरक्षनाथ और उनका साहित्य शीर्षक के अन्तर्गत चर्चा करेंगे यहां प्रसंगवष हम

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

केवल कतिपय विद्वानोंविचारकों द्वारा इस समाज को सामाजिक मूल्यों से हीन तथा केवल अषिक्षित और निम्न जातियों के सदस्यों में ही लोकप्रिय होने की भ्रांति का निवारण कर रहे हैं।श्

राजस्थान प्राच्य विधापीठ, जोधपुर से वर्ष 1997 में 'राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय और साहित्य शीर्षक से प्रकाषित 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के अंक 190 में दीनदयाल ओझा जैसे कतिपय विचारकों ने नीच जातियों से संबद्ध और अषिक्षित लोगों पर ही नाथपंथ का प्रभाव होना बताया है, तो प्रो0 बृजबिहारी जैसे विद्वान ने कुछ कापालिक, कौल व बौद्ध सिद्धों द्वारा प्रयोग की गयी वामाचार तथा वज्रोली क्रियाओं के अवगुणों को नाथ सम्प्रदाय से जोड़ने का उपक्रम करते हुए अत्यन्त क्षीण स्वर से इस सम्प्रदाय को सामाजिक मूल्यों से रहित होना कहा है। हम इस मत से सहमत नहीं है। अग्रांकित पäयिं में इन बिन्दुओं पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

प्रथमत: सभी विद्वज्जन इस बात से सहमत हैं कि, ईसा पूर्व की छठी शताबिद दार्षनिक संक्राति का समय था और इस कारण भारतीय सांस्कृतिक व सामाजिक इतिहास में भी एक विषेष प्रकार की हलचल दिखायी पड़ती है। वेदों द्वारा प्रदर्षित मार्ग ज्ञान, विज्ञान और उपासना के त्रिकोणीय समन्वय की स्वस्थता से गिरकर केवल कर्मकाण्ड तक सीमित रह जाने से सामान्य लोगों के साथ उसका सीधा सम्पर्क नहीं रह गया था और वेदों के मंत्र व उनकी परिभाषाएं एक समूह विषेष के हाथों की कठपुतली बन गये थे। याज्ञिक कर्मकाण्ड में पषुओं की बलि का प्रतिरोध होने लगा था जो प्रारमिभक तौर पर वैदिक संस्कृति में सुधारवादी दृषिटकोण के रूप में अपनाया गया और धीरे-धीरे ऐसे लोगों की एक अलग पहचान बन गयी जिन्हें श्रमण विचारधारा की संज्ञा दी गयी। भगवान महावीर तथा भगवान बुद्ध इस श्रमण विचारधारा के प्रथम प्रवä ा थे और इसी समय हिन्दुओं का एक बहुत बड़ा भाग जैन सम्प्रदाय के रूप में अलग हो गया।

ईसा की प्रथम शताबिद के आस पास बौद्ध धर्म के अन्तर्गत महायान का विकास हुआ। इस विचार तथा साधना पद्धति की मूल प्रेरणा यह थी कि बौद्ध धर्म की कठिन और दु:साध्य जीवन पद्धति को साधारण जन के लिए सुगम और सहज बनाया जावे। महायानियों का चिन्तन केवल व्यä अैर उसका निर्वाण नहीं था, वरन लोकहित और समस्त लोक का कल्याण उनका अभीष्ट था। इस प्रकार वे लोग जो योग और अध्यात्म में पूर्ण विकसित नहीं थे, महायानियों ने उनके लियेे भी निर्वाण तथा क्लेषषमन का एक मार्ग खोल दिया। इस महायान विचारधारा के विकसित होते ही भगवान बुद्ध द्वारा प्रवर्तित कठोर श्रमण आचारों के विरुद्ध एक विæोह खड़ा हो गया। जो भिक्षु भगवान बुद्ध को आदर्ष मानकर वैयäकि पूर्णत्व और वैयäकि साधना पर बल देते थे उनको हीन दृषिट से देखा जाने लगा और ये ही बौद्ध मत की दो प्रमुख शाखाएं कहलाईं।

शाबिदक अर्थ के दृषिटकोण से डा0 धर्मवीर भारती और ब्रिटानिका एन्साइक्लोपीडिया में उचित ही लिखा है कि, बौद्धधर्म की इस नवीन लोकपरक विचारधारा 'महायान के आचायोर्ं के मन में बड़ा उत्साह था और वे संसार रूपी समुæ्र से पार जाने के लियेे पुराने सिथरवादी बौद्धधर्म को हीन प्रकार की नौका 'हीनयान और उसकी तुलना में इसे 'महायान अर्थात बड़ी नौका कहा करते थे। कालान्तर में साधक की सुविधा और जनसाधारण को आकर्षित करने के लियेे इस महायान विचारधारा में अनेक बातें जुड़ती चली गयी, जिनमें वामाचार पर आधारित साधनाओं का विकास भी शामिल था। सामाजिक मूल्यों से रहित इन साधनाओं के समिमलित होते ही महायान विचारधारा 'वज्रयान के रूप में प्रतिषिठत हो गयी।[2,3]

इसी समय एक वाद-विवाद में काम विषय की जानकारी नहीं होने से योगी मत्स्येन्द्रनाथ परकाया प्रवेषन द्वारा कामरूप देष के राजा के शरीर में रहते हुए उसकी दो रानियों के साथ गृहस्थ होकर दाम्पत्य जीवन का सुख उपभोग करने लगे। षिव के शापवष (पार्वती को अमरकथा बताते समय डोंगी के नीचे मच्छ रूप में चोरी से कथा सुनने के कारण) योग विस्मृति हुई और पती के शरीर में योगी मत्स्येन्द्रनाथ की जानकारी होने तथा उनके षिष्यों द्वारा किये जाने वाले प्रपंचों से बचने के लिसे उन दोनों रानियों ने नगर में अन्य पुरूष का प्रवेष निषेध कर दिया। बाद में उनके प्रमुख षिष्य महायोगी गोरक्षनाथ ने मंगलामुखियों (किन्नर) के साथ मृदंगवादक के रूम में जाकर जाग मछन्दर गोरख आया का संकेत मृदंग की ताल में दिया और उन्हें अपने वास्तविक जीवन की याद आयी तो कामरूप छोडा। कामरूप देष में व्यतीत इस काल को बहु प्रचारित करते हुए योगी मत्स्येन्द्रनाथ के प्रतिद्वनिदयों ने उन्हें बौद्ध और वामाचारी प्रसिद्ध कर दिया। उनका वामाचार की ओर उन्मुख होने का पौराणिक सन्दर्भ (षिव द्वारा उन्हें योगमार्ग को भूलने और पार्वती द्वारा वामाचार में भटकने का अभिषाप देना) चाहे जो हो किन्तु योगी मत्स्येन्æनाथ ने वामाचार के प्रयोग में स्वयं को शीर्ष पर आरूढ़ करते हए कौलषास्त्र व अकुलवीरतन्त्र की रचना की और 'कौल मार्ग नामक एक नया ही सम्प्रदाय खडा कर दिया। वस्तुत: वज्रयान की यही विकृतता बौद्ध दर्षन के पतन का प्रारम्भ था तथा भारतीय आध्यातिमक साधना मागोर्ं में सर्वोच्च आदि पंथ नाथ सम्प्रदाय (जो उस समय तक नाथ सम्प्रदाय की संज्ञा से कम और अन्य नामों से अधिक जाना जाता था) के शीर्ष योगी मत्स्येन्द्रनाथ के इस कामरूप में अल्प प्रवास को वज्रयान के वामाचार से जोडकर नाथयोगियों को वामाचारी और वज्रयानी प्रचारित

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

कर दिया गया। इस दुष्प्रचार की निरन्तरता से नाथ संप्रदाय को कालान्तर में बहुत क्षति हुई किन्तु यही वह समय था जब वामाचार को योगी मत्स्येन्æ्रनाथ जैसे महान आचार्य द्वारा समर्थित मानकर और उसका अनुसरण करते हुए भारतीय दर्षन के अन्य सम्प्रदायों और अध्यातिमक साधना पद्धतियों में भी इस वामाचार ने अपने पंजे जमा लिये थे।

दार्षनिक, आध्यातिमक, सांस्Ñतिक और साधना पद्धतियों के इस महान संक्रानित काल में अनुभवों के आदान-प्रदान या अन्य किसी भी कारण से तत्कालीन प्रमुख आचायोर्ं के मध्य होने वाली वैयäकि अथवा राज्य द्वारा आयोजित होने वाली गोषिठयों की कल्पना सहज ही की जा सकती है। यह मान भी लिया जाये कि नाथ सम्प्रदाय के प्रमुख आचार्य योगी मत्स्येन्æनाथ सहित कुछ अन्य नाथयोगियों ने भी प्रायौगिक तौर पर वज्रयानी विचारधारा को अपना लिया होगा जिसके परिणामस्वरूप नाथ सम्प्रदाय में कौलाचार अथवा वामाचार का प्राकटय हुआ किन्तु, योगी गोरक्षनाथ इस घटनाक्रम से अछूते रहे और अपने ही गुरु योगी मत्स्येन्æ्रनाथ को वज्रयानी वामाचार व कौल मत से बाहर निकालकर पुन: नाथपंथ में लेकर आये।

इस ऐतिहासिक घटना के पष्चात एक ओर जहां जनसाधारण को लुभाने के लिये बौद्धमत में गहरे तक बैठ चुके लचीलेपन को विराम मिलता है और बौद्धमत के तत्कालीन आचार्य भी अपने मूल सिद्धान्तों को पुनस्र्थापित करने की ओर उन्मुख होते हैं, वहीं योगी मत्स्येन्æनाथ के वामाचार काल के दौरान उनके और आसाम के कामाक्षा (कामाख्या व कामरूप देष भी बोला जाता है) प्रदेष की रानी के संसर्ग से उत्पन्न, दो पुत्र नेमिनाथ और मीननाथ जैन सम्प्रदाय को अपने आराध्य के रूप में मिलते हैं। इतिहास की यह एक ऐसी अदभुत कड़ी है जहां नाथ सम्प्रदाय की सर्वश्रेष्ठता और प्रभुता अपने चरम पर सिद्ध होती है।

सत्य कहा जाये तो विद्वज्जनों ने नाथपंथ के इस शुद्ध स्वरूप की पुन:स्थापना को ही नाथपंथ के आविर्भाव का समय मानते हुए इसे बौद्ध और जैन मत का पष्चातवर्ती होना मान लिया है, जबकि मोहन-जो-दड़ो (शुद्ध रूप मोअन-मृतक, जो-का, दड़ो-टीला है) की खुदाई में कानों में कुण्ड़ल युä एक योगी की मूर्ति प्राप्त हुई है। अनेक प्रमाणों के आधार पर राजमोहन, नाथ तत्त्वभूषण वी.ई. शिलांग ने मत्स्येन्द्र तत्त्व नामक अपनी कृति में इस मूर्ति को योगी मत्स्येन्द्रनाथ की मूर्ति सिद्ध किया है। वेदिक रूद्र और पौराणिक नायक कर्णकुण्डलधारी महादेव शंकर की आदिपुरूष व आदिनाथ संज्ञाओं के अतिरिक्त अनेक तथ्य व प्रमाण हैं कि यह सम्प्रदाय प्राचीन है और सिद्ध नाथ व योगी पदों का प्रयोग महाकाव्य काल में भी था जब बौद्ध और जैन शब्दरूप में भी नहीं थे। जैन सम्प्रदाय के 24 तीर्थंकरों की सूचि में से 19 और यदि 9वें तीर्थंकर पुष्पदन्त भगवान के दूसरे नाम सुविधि नाथ भगवान को जोडें तो 20 नामों के साथ 'नाथ जुडा होना इस पंथ की प्राचीनता के संबंध में सभी अनुमानों को विराम देते हुए इस वाद विवाद को ही समाप्त कर देता है। इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय पर वज्रयान विचारधारा की वज्रोली क्रियाओं और वामाचार से सम्बद्ध करते हुए इसे सामाजिक मूल्यों से रहित कहना तार्किक और न्यायसंगत नहीं है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक दृषिट जैन संप्रदाय के 24 तीर्थंकरों पर डाले तो दो के अतिरिक्त सभी तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंष से संबंधित है। इक्ष्वाकु का अर्थ इच्छापूर्वक चुना हुआ कुल अर्थात परिवारसमुदाय है। 20वें तीथर्ंकर मुनिसुव्रत नाथ और 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ हरिवंस वंष के थे। नेमीनाथ को मथुरा के यदुवंषी राजा अंधकवृष्णी के ज्येष्ठ पुत्र समुद्रविजय का पुत्र और वासुदेव श्रीकृष्ण का चचेरा भाई भी बताया जाता है। चौबीस तीथर्ंकरों मे से प्रथम तथा अनितम चार तीर्थंकरों के बारे में बहुत कुछ पढने को मिलता है किन्तु शेष तीर्थंकरों के बारे में कम ही जानकारी मिलती है। निषिचत ही जैन शास्त्रों में इनके बारे में बहुत कुछ लिखा है किन्तु जन साधारण सहित स्वयं जैन मतावमिबयों में भी ऐसे लोगों की संख्या अधिक है जो इन तीर्थंकरों के बारे में कम ही जानते हैं। हमारा प्रयास केवल सामान्य परिचय देना है। 24 तीर्थंकरों की नामावली एवं उनकी संक्षिप्त जानकारी सलंग्न सूचि में दी गयी है।

ऋषभ के अतिरिक्त सभी ने अपने मूल स्थानों पर दीक्षा (अभिषेक) और ज्ञान प्राप्त किया था। ऋषभ पुरिमतल नेमी में गिरनार पर एक केललिन बने और महावीर रिजुपलुक नदी पर। बीस तीर्थंकरों ने समेत षिखर पर मोक्ष प्राप्त किया, ऋषभदेव ने हिमालय के कैलाष पर्वत पर, वासुपूज्य ने उत्तर बंगाल के चम्पापुरी में, नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत पर और महावीर ने पावापुर में निर्वाण प्राप्त किया। ऋषभ, नेमीनाथ और महावीर को पदमासन में और शेष 21 को कयोत्सर्ग मुद्रा में मोक्ष प्राप्त होना माना जाता है।

जहां तक कापालिक मत का प्रष्न है, तो शैवसम्प्रदाय की अन्य शाखाओं की भांति कापालिक भी नाथपंथ का सहमार्गी और सीमित अथोर्ं में समसामयिक तो है किन्तु सहमार्गी का तात्पर्य सहधर्मी भी हो यह सर्वदा आवष्यक नहीं है। इन दोनों में अन्तर का प्रमुख आधार तो इनकी उत्पत्ति और उत्पत्ति के कारणों में निहित है। यधपि दोनों ही सम्प्रदायों की उत्पत्ति आदिनाथ भगवान षिव द्वारा हुई है किन्तु जहां नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति लोककल्याणकारी योगमार्ग के प्रचार के लिये हुयी है और यह मत आरंमिभक काल से ही लोकपरक है वहीं कापालिक मत का आधार ही वामाचार था और यह आरम्भ से ही व्यäपिरक रहा है।

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

नाथमत मेंः जहां ब्रह्मचर्य की प्रधानता थी और स्त्रीसंग का निषेध था, वहीं कापालिक मत मेंः प्रत्येक स्त्री कपालवनिता है और उसके साथ भोग द्वारा ही चित्त की चंचलता को रोकने को कैवल्यरूप मेंः अवसिथत तथा षिवरूप आत्मा का साक्षात्कार मानते थे।

यह सुस्थापित तथ्य है कि, योगी गोरक्षनाथ अपने समय मेंः (चूंकि यह निषिचत नहींः है अत: समय से तात्पर्य उनकी उपसिथति कहा जावे तो युäयिुä होगा) इतने प्रसिद्ध महापुरुष हुए हैं कि, उन दिनों और उनके पष्चात तत्काल निकटवर्ती समय मेंः, उनकी और उनके द्वारा पुन:स्थापित नाथ सम्प्रदाय की प्रसिद्धि और लोकप्रियता इतनी अधिक है कि, कोई भी दार्षनिक, सन्त अथवा राजाओं सहित गणमान्य व्यä कि उसके मत व सिद्धान्त अथवा पंथ के पुरोभाग मेंः योगी गोरक्षनाथ का नाम रखे बिना मान्यता और गौरव मिलना संभव नहींः था। यह पृवृती कमोबेष आज भी यथावत है। वर्ष 2011 के प्रारंभिक दिनों में शनिदेव की महिमा सिद्ध करने वाले दूरदर्षन पर प्रदर्षित धारावाहिक की एक श्रंखला में शनिदेव को राजा भर्तृहरि को योगमत में लाने के प्रसंग में महायोगी गोरक्षनाथ की सहायता करना बताया गया। निष्कर्ष यह कि प्रत्येक व्यä अैर पंथ अपने मत को मान्यता दिलाने के लियेः उस पर गोरक्षनाथ के नाम की मोहर लगाने और नाथ सम्प्रदाय से संबद्ध करने की प्रतिस्पर्धा करता प्रतीत होता है। इन दावों की सत्यता को परखने के लिये अपनायी गयी कसौटियां भी उनकी अपनी हैं और परिणाम भी उनका मनवांछित ही है।[1,2]

अब जरा समय की कसौटी पर पर इसे परख लिया जाये तो विषय के साथ संभवत: कुछ न्याय हो सके। अग्रांंकित तालिका उन महापुरूषों के जन्म एवं देहावसान के संबंध में संकलित तथ्यों की सूचि है जिनसे उनके वाद-विवाद, भेंट, प्रतिस्पर्धा आदि का ब्यौरा अपने मत के समर्थन में दिया जाता है।

परिणाम

भगवान शिव के उपासक नाथों के द्वारा जो साहित्य रचा गया, वही नाथ साहित्य कहलाता है। राहुल संकृत्यायन ने नाथपंथ को सिद्धों की परंपरा का ही विकसित रूप माना है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथपन्थ या नाथ सम्प्रदाय को 'सिद्ध मत', 'सिद्ध मार्ग', 'योग मार्ग', 'योग संप्रदाय', 'अवधूत मत' एवं 'अवधूत संप्रदाय' के नाम से पुकारा है।[1]

वर्गीकरण की दृष्टि से हिंदी के आदिकालीन साहित्य को तीन वर्गों में बाँटा जाता है - धार्मिक, लौकिक एवं इतर साहित्य; नाथ साहित्य इनमें से धार्मिक साहित्य के वर्ग में आता है, और इस वर्ग में अन्य हैं - सिद्ध साहित्य और जैन साहित्य।[2]

सिद्धों के महासुखवाद के विरोध में नाथ पंथ का उदय हुआ। नाथों की संख्या नौ है। इनका क्षेत्र भारत का पश्चिमोत्तर भाग है। इन्होंने सिद्धों द्वारा अपनाये गये पंचमकारों का नकार किया। नारी भोग का विरोध किया। इन्होंने बाह्याडंबरों तथा वर्णाश्रम का विरोध किया और योगमार्ग तथा कृच्छ साधना का अनुसरण किया। ये ईश्वर को घट-घट वासी मानते हैं। ये गुरु को ईश्वर मानते हैं। नाथ में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गोरखनाथ हैं। इनकी रचना गोरखबाणी नाम से प्रकाशित है। इस साहित्य की सबसे बड़ी कमी इसका रूखापन और गृहस्थ जीवन की उपेक्षा का भाव है।[3]

नाथ सम्प्रदाय

नाथ सम्प्रदाय का उल्लेख विभिन्न क्षेत्र के ग्रंथों में जैसे- योग (हठयोग), तंत्र (अवधूत मत या सिद्ध मत), आयुर्वेद (रसायन चिकित्सा), बौद्ध अध्ययन (सहजयान तिब्बती परम्परा 84 सिद्धों में), हिन्दी (आदिकाल के कवियों के रूप) में चर्चा मिलती हैं।[2,3]

यौगिक ग्रंथों में नाथ सिद्ध : हठप्रदीपिका के लेखक स्वात्माराम और इस ग्रंथ के प्रथम टीकाकार ब्रह्मानंद ने हठ प्रदीपिका ज्योत्स्ना के प्रथम उपदेश में 5 से 9 वे श्लोक में 33 सिद्ध नाथ योगियों की चर्चा की है। ये नाथसिद्ध कालजयी होकर ब्रह्माण्ड में विचरण करते है। इन नाथ योगियों में प्रथम नाथ आदिनाथ को माना गया है जो स्वयं शिव हैं जिन्होंने हठयोग की विद्या प्रदान की जो राजयोग की प्राप्ति में सीढ़ी के समान है।

आयुर्वेद ग्रंथों में नाथ सिद्धों की चर्चा : रसायन चिकित्सा के उत्पत्तिकर्ता के रूप प्राप्त होता है जिन्होंने इस शरीर रूपी साधन को जो मोक्ष में माध्यम है इस शरीर को रसायन चिकित्सा पारद और अभ्रक आदि रसायानों की उपयोगिता सिद्ध किया। पारदादि धातु घटित चिकित्सा का विशेष प्रवर्तन किया था तथा विभिन्न रसायन ग्रंथों की रचना की उपरोक्त कथन सुप्रसिद्ध विद्वान और चिकित्सक गणनाथ सेन ने लिखा है।

तंत्र गंथों में नाथ सम्प्रदाय: नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ शिव है, मूलतः समग्र नाथ सम्प्रदाय शैव है। शाबर तंत्र में कपालिको के 12 आचार्यों की चर्चा है- आदिनाथ, अनादि, काल, वीरनाथ, महाकाल आदि जो नाथ मार्ग के प्रधान आचार्य माने जाते है। नाथों ने ही

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

तंत्र गंथों की रचना की है। नित्यातंत्र में शिव ने कहा है कि - नव नाथों- जडभरत मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, , सत्यनाथ, चर्पटनाथ, जालंधरनाथ नागार्जुन आदि ने ही तंत्रों का प्रचार किया है।

बौद्ध अध्ययन में नाथ सिद्ध 84 सिद्धों में आते है। राहुल सांकृत्यायन ने गंगा के पुरातत्त्वांक में बौद्ध तिब्बती परम्परा के 84 सहजयानी सिद्धों की चर्चा की है जिसमें से अधिकांश सिद्ध नाथसिद्ध योगी हैं जिनमें लुइपाद मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षपा गोरक्षनाथ, चैरंगीपा चैरंगीनाथ, शबरपा शबर आदि की चर्चा है

हिन्दी में नाथसिद्ध : हिंदी साहित्य में आदिकाल के कवियों में नाथ सिद्धों की चर्चा मिलती है। अपभ्रंश, अवहट्ट भाषाओं की रचनाऐं मिलती है जो हिन्दी की प्रारंभिक काल की है। इनकी रचनाओं में पाखंड़ों आडंबरो आदि का विरोध है तथा चित्त, मन, आत्मा, योग, धैर्य, मोक्ष आदि का समावेश मिलता है जो साहित्य के जागृति काल की महत्वपूर्ण रचनाऐं मानी जाती है। जो जनमानस को योग की शिक्षा, जनकल्याण तथा जागरूकता प्रदान करने के लिए था।[4,5]

हिंदीतर भाषाओं में नाथ साहित्य

कुछेक भाषाओं के छोड़कर, नाथ साहित्य संपूर्ण भारतीय वांग्मय में प्राप्त होता है। दक्षिण भारत में नाथ साहित्य की रचना कम हुई है क्योंकि वहाँ शैव लोगों में शिव भक्त ही अधिक थे योगी नहीं।[4] मराठी, बंगाली।[5]

नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति किस प्रकार हुई और कितने आचार्य हुए, इस विषय में विद्वदजन भ्रमित हैं क्योंकि वे इस सम्प्रदाय को जैन और बौद्ध सम्प्रदाय का पष्चातवर्ती मानते मानते हैं। जबकि पूर्ववर्ती अध्याय में यह निषिचत हो चुका है कि, यह सम्प्रदाय आदिनाथ भगवान शंकर द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय है और सर्वप्रथम उनके नाम के साथ यह पद प्रयुक्त हुआ है। इस सम्प्रदाय को नाथ सम्प्रदाय की संज्ञा से प्रसिद्ध होने से पूर्व इसे सिद्धमत, सिद्धमार्ग, योगमार्ग, योगी सम्प्रदाय, अवधूत मत, अवधूत सम्प्रदाय, कापालिक आदि नामों से जाना जाता रहा है और आज भी ये नाम प्रचलन में है। इनमें से कापालिक संज्ञा के स्थान पर कहीं-कहीं तानित्रक पद का प्रयोग किया जाता हैं, किन्तु इनमें सर्वाधिक प्रयोग होने वाले पद नाथ और योगी ही हैं।

हठयोग प्रदीपिका नामक ग्रन्थ में नाथ सम्प्रदाय के अनेक सिद्ध योगियों के नाम दिये गये हैं जिनके बारे में विष्वास किया जाता है कि, वे सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में भ्रमणषील हैं। नाथ सम्प्रदाय की मान्यता है कि, सर्वप्रथम नव नाथों की उत्पत्ति हुयी जिन्हें अयोनिज अर्थात जन्म की साधारण प्रक्रिया मैथुन और योनि से उत्पन्न नहीं होने वाला बताया गया है। 'महार्णव तन्त्र में कहा गया है कि, ये नवनाथ ही नाथ सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक हैं। इस ग्रन्थ में नवनाथों को अलग-अलग दिषाओं का अधिष्ठाता बताया गया है। इन नव नाथों की उत्पत्ति के बारे में 'योगिसम्प्रदायविष्कृति (योगाश्रम संस्कृत कालेज हरिद्वार के योगी चन्द्रनाथ द्वारा अनुवादित) में बताया गया है कि, नव नारायण ने ही नव नाथ के रूप में अवतार लिया है। कथा के अनुसार सृषिट रचना के पष्चात जीवों को नाष की ओर जाते देखकर षिव ने जीवों को योगमार्ग का उपदेष देने के लिये नव नारायणों को आदेष दिया। इन नवनारायणों के नाम, उनके द्वारा लिये गये अवतार और कौन किसका षिष्य बना यह निम्नांकित तालिका से प्रकट होता है।[6,7]

क्र. सं. नवनारायण के नाम उनके द्वारा लिया गया अवतार उनके गुरु का नाम

1. कविनारायण मत्स्येन्द्रनाथ षिव
2. करभाजनारायण गहनिनाथ षिव
3. अन्तरिक्षनारायण जालन्धरनाथ षिव
4. हरिनारायण भतर्ृहरिनाथ गोरक्षनाथ
5. आविर्होत्रनारायण नागनाथ गोरक्षनाथ
6. पिप्पलाययननारायण चर्पटनाथ मत्स्येन्द्रनाथ
7. चमसनारायण रेवानाथ मत्स्येन्द्रनाथ
8. प्रबुद्धनारायण करणिपानाथ जालन्धरनाथ
9. द्रुमिलनारायण गोपीचन्द्रनाथ जालन्धरनाथ

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

ऊपरोक्त तालिका के अध्ययन से प्रकट होता है कि, नवनारायणों द्वारा ही नाथ रूप में अवतार लिया गया और इस प्रकार नवनारायण ही नवनाथ हुए। इस तालिका का आगे अर्थ यह हुआ कि षिव तथा गोरक्षनाथ नवनारायण से नवनाथ बनने वालों के गुरु तो हैं, किन्तु वे न तो नवनारायणों में है और न ही नवनाथों में। यदि षिव तथा गोरक्षनाथ को इस सूची में समिमलित किया जावे तो नवनाथ के स्थान पर यह संज्ञा 'एकादषनाथ होगी। इसका अर्थ यह हुआ कि आदिनाथ षिव तथा योगी गोरक्षनाथ नवनाथों की उस श्रृंखला में शामिल नहीं हैं जो नवनारायण से नवनाथ बने हैं। इसका आगे अर्थ यह हुआ कि षिव और गोरक्षनाथ एक ही हैं और वे अपना मत नहीं बदलते, अपितु आवष्यकता होने पर योग मार्ग के प्रचार हेतु अन्य दिव्यात्माओं को योगमार्ग में दीक्षित कर उनका नेतृत्व करते हैं।

नवनाथों के नामों पर विचार करते हैं तो ग्रन्थों और विद्वानों को नवनाथों के नाम पर एकमत नहीं पाते। तुलनात्मक व सुगम अध्ययन और सुविधा के दृषिटकोण से हम इसे दो भागों में विभाजित कर लेते हैं। प्रथमत: अनावष्यक सूचि विंस्तार एवं आधुनिक विद्वानों के शोध के पुनरूद्धरण से बचने के लिये नाथ सम्प्रदाय से संबद्ध केवल कुछ प्राचीन और मान्य आधुनिक ग्रन्थों में दिये गये नवनाथों के नाम अगले पृष्ठ पर दी गयी तालिका में शामिल किये गये हैं, जिन्हें अध्ययन और सुविधा के दृषिटकोण से हमने सिद्ध नाथयोगियों को विभिन्न ग्रन्थों में उनकी उपसिथति की आवृती द्वारा उनकी मान्यता को जांचने का प्रयास किया है। परिणाम निष्चय ही बहुत चौंकाने वाले हैं। यह सिथति तो ग्रन्थों की एक लम्बी सूचि में से बहुत विचार विमर्ष के पश्चात चयनित मात्र 9 ग्रन्थों के अध्ययन का परिणाम है।[7,8] हमें विष्वास था कि महार्णव-तन्त्र, योगिसम्प्रदायाविष्कृति, सुधाकर चनिद्रका और गोरक्ष सिद्धान्त नामक ग्रन्थों में नवनाथों के नाम समान होंगें और आषंका थी, कि सोमन्न रचित 'नवनाथ चरित्र, कृष्णकुमार बाली रचित 'भारत में नाथ सम्प्रदाय, डा0 कृष्णलाल रचित 'हिंदी साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, मलिक मौहम्मद जायसी रचित 'पदमावत और ढूंढीराज रचित 'चिन्तामणी विजय में नवनाथों के नाम समान नहीं होगें।

निष्कर्ष

विशेषताएँ

- इसमें ज्ञान निष्ठा को पर्याप्त महत्व प्रदान किया गया है,
- इसमें मनोविकारों की निंदा की गई है,
- इस साहित्य में नारी निन्दा का सर्वाधिक उल्लेख प्राप्त होता है,
- इसमें सिद्ध साहित्य के भोग-विलास की भर्त्सना की गई है,
- इस साहित्य में गुरु को विशेष महत्व प्रदान किया गया है,
- इस साहित्य में हठयोग का उपदेश प्राप्त होता है,
- इसका रूखापन और गृहस्थ के प्रति अनादर का भाव इस साहित्य की सबसे बड़ी कमजोरी मानी जाती है,[6]
- मन, प्राण, शुक्र, वाक्, और कुण्डलिनी- इन पांचों के संयमन के तरीकों को राजयोग, हठयोग, व

ज्रयान, जपयोग या कुंडलीयोग कहा जाता है।इसमे भगवान शिव की उपासना उदात्तता के साथ मिलती है। नाथ साहित्य में साधनात्मक शब्दावली का प्रयोग भी बहुलता से मिलता है

यह अपेक्षा की जाती है कि, नाथ सम्प्रदाय के चार प्रमुख आचायोर्ं क्रमष: आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ जालन्धरनाथ और गोरक्षनाथ का नाम तो नवनाथों की सभी सूचियों में अवष्य होगा किन्तु 'योगी सम्प्रदाया विष्कृति और 'सुधाकर चनिद्रका ग्रन्थों में गोरक्षनाथ को नवनाथों में समिमलित नहीं किया गया। 'नवनाथ चरित्र, 'भारत में नाथ सम्प्रदाय और 'गोरक्ष सिद्धान्त संगृह में जालन्धरनाथ को नवनाथों में समिमलित नहीं किया गया। 'योगीसम्प्रदाय विष्कृति, 'नवनाथ चरित्र तथा 'चिन्तामणि विजय में आदिनाथ को नवनाथों में समिमलित नहीं किया गया। केवल मत्स्येन्द्रनाथ का नाम सभी ग्रन्थों में समान रूप से नवनाथों में शामिल है, जो कहीं पर मीननाथ और कहीं पर मत्स्येन्द्रनाथ नाम से उलिलखित है। गहनीनाथ व गैनीनाथ और जालन्धर व ज्वालेन्द्रनाथ, नागाजर्ुन व नागनाथ, रेवानाथ व रेवणनाथ, करणिपानाथ व कानिपानाथ को हमने एक ही मान लिया है।[9,10]

द्वितियत: नाथ सम्प्रदाय के अनुयायियों में प्रचलित मौखिक परम्पराओं पर दृषिटपात करें तो उनमें भी नवनाथों के नामों पर मतैक्य नहीं मिलता। मौखिक परम्परा के सन्दर्भ में 'नवनाथ जाप नाम से एक स्तुति में आदिनाथ, उदयनाथ, सत्यनाथ, संतोषनाथ, कंथड़नाथ, अचम्भेनाथ, चौरंगीनाथ, मछन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ के नाम हैं, किन्तु इससे मिलती जुलती संज्ञा वाले नवनाथ

ISSN: 2395-7639

International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

(A Monthly, Peer Reviewed Online Journal)

Visit: www.ijmrsetm.com

Volume 6, Issue 5, May 2019

रक्षा जाप मंत्र में़ बालगुन्दाई (सम्भवत: गुसाईं), धूंधलीमल और एक अन्य मौखिक परम्परा में़ खरमचलनाथ ऐसे नाम हैं जो न तो किसी ग्रन्थ में़ बताये गये और न ही नाथ सम्प्रदाय के सन्तों द्वारा अनुमोदित है। अलग-अलग स्थानों पर भाषा के उच्चारण और परम्परा के कारण इन नवनाथों के नामों की वर्तनी में़ किंचित भेद को स्वाभाविक और सामान्य बात मानकर छोड़ दें तो इतना तो माना जा सकता है कि, उदयनाथ को उदेनाथ, सत्यनाथ को सतनाथ, अचल अचम्भनाथ को आंचोली अंचेपानाथ, मत्स्येन्द्र को मछन्दर और गजबेली गजकन्थड़नाथ को घोडाचोली कन्थड़ीनाथ उच्चरित किया गया है।

नाथ सम्प्रदाय से इतर विद्वदजनों और मौखिक परम्पराओं के अतिरिक्त नाथ सम्प्रदाय के सन्तों द्वारा रचित ग्रन्थों में़ भी नवनाथों की सूची का अनुमान मिलता है। इस क्रम में़ विटठल योगीष्वर मठ कर्णाटक के महन्त राजा पीर योगी चन्द्रनाथ ने "पीर द्वारकानाथ वाणी तथा "जोगमाया जाप संगृह नामक ग्रन्थों में़ नवनाथ मंत्र जाप और नवनाथ भजन लिखा है। मृगस्थली काठमाण्डू के पीठाधीष्वर व नेपाल के राजगुरू विद्वान योगी प्रवर नरहरिनाथ ने "नाथ नित्यकर्म, "नवनाथ स्वरूप वर्णन तथा "नवनाथ चरित्र में़ नवनाथों के नाम उलिलखित किये हैं जिनकी अवधूत योगी महासभा दलीचा भेक (भेष) बारह पंथ हरिद्वार द्वारा पुषिट की गयी है। इसी प्रकार नवनाथों के नामक्रम में़ सभी संषयों का विच्छेदन करते हुए नाथ सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ 'गोरक्ष टिल्ला काषी वाराणसी से प्रकाषित 'नवनाथ कथा नामक ग्रन्थ में़ भी नवनाथों के वे ही नाम हैं जो उक्त दोनों महानुभावों द्वारा अपने ग्रन्थों में़ बताये गये हैं़़। यहां यह उल्लेखनीय है कि, नाथ सम्प्रदाय के सन्तों द्वारा नवनाथों की नामावली उनके द्वारा की जाने वाली नवनाथों की वन्दनास्तुति पर आधारित होने से अधिक विष्वसनीय होने का प्रबल आधार है। नाथ सम्प्रदाय के सन्तों द्वारा रचित ग्रन्थों में़ नवनाथ नामावली को साररूप में़ प्रस्तुत किया जावे तो वन्दना क्रम से जो समान नाम प्रकट होते हैं़ वे इस प्रकार है। आदिनाथ, उदयनाथ, सत्यनाथ, सन्तोषनाथ, अचल अचम्भनाथ, कन्थड़नाथ, चौरंगीनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ।[11]

संदर्भ

1. शर्मा 2009, पृ॰ 51.
2. ↑ गौतम 2006, पृ॰ 10.
3. ↑ हजारीप्रसाद 2009.
4. ↑ गौतम 2009, पृ॰प॰ 74~.
5. ↑ त्रिपाठी 2017, पृ॰ 28.
6. ↑ द्विवेदी 2009.
7. रमेश, गौतम; प्रभा; रचना, सिंह (2006). काव्य सुधा. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-8143-602-4. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2018.
8. हजारीप्रसाद, द्विवेदी (2009). हिंदी साहित्य: उद्भव और विकास. राजकमल प्रकाशन. पपृ॰ 31~. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-267-0035-6. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2018.
9. शर्मा, राजमणि (2009). अपभ्रंश भाषा और साहित्य. भारतीय ज्ञानपीठ. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-263-1711-0. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2018.
10. रामछबीला, त्रिपाठी (2017). हिंदी और भारतीय भाषा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन. Vāṇī Prakāśana. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-93-86799-14-2. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2018.
11. गौतम, मूलचंद (2009). भारतीय साहित्य. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-81-8361-352-1. अभिगमन तिथि 31 दिसम्बर 2018.